International Journal of Multidisciplinary Research and Development 2014; 1(3): 142-146

International Journal of Multidisciplinary Research and Development

IJMRD 2014; 1(3): 142-146
www.allsubjectjournal.com
Received: 14-08-2014
Accepted: 27-08-2014
e-ISSN: 2349-4182
p-ISSN: 2349-5979

डॉ. भगत सिंह
एसोशिएट प्रोपेफसर, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, कुरुक्षेत्रा विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्रा।

Correspondence:
डॉ. भगत सिंह
एसोशिएट प्रोपेफसर, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, कुरुक्षेत्रा विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्रा।

प्राचीन अस्त्र–शस्त्रों के अध्ययन में भारतीय सिक्कों की प्रासंगिकता

डॉ. भगत सिंह

मानव जीवन में अस्त्र–शस्त्रों का विशिष्ट महत्त्व रहा है। मानव विकास के प्रारंम्भिक चरण के साथ ही अस्त्र–शस्त्रों का निर्माण प्रारम्भ हो जाता है। अस्त्र ऐसे आयुध को कहते हैं जो फैंककर मारे जाते है, जैसे तीर, भाला, त्रिशूल आदि तथा शस्त्र वे आयुध है जिन्हें हाथ से पकड़कर चलाया जाता है, जैसे तलवार, गदा आदि। भारत में प्रागैतिहासिक काल से ही अस्त्र–शस्त्रों का निर्माण हो चुका था जिसके साक्ष्य सोहन घाटी तथा नर्मदा घाटी से मिलते है।[1] इन अस्त्र–शस्त्रों के माध्यम से ही आज पुरातत्त्वविद् प्रागैतिहासकालीन मानव के विकास की कहानी लिखने में सफल हो पाया है। वैदिक सभ्यता के बाद मुख्यतः उत्तर भारत में द्वितीय नगरीकरण का उदय हुआ। इस समय बड़े–बड़े नगर व राज्य बनने लगे तथा लोहे की तकनीक को बढ़ावा मिला जिसके फलस्वरूप कृषि, व्यापार, उद्योग धन्धों तथा नगरों में काफी वृद्धि हुई।[2] राजाओं तथा प्राचीन संस्थाओं ने व्यापार में लेन–देन के माध्यम के लिए आहत मुद्राओं का प्रचलन शुरू हुआ। साम्राज्य विस्तार की भावना से इस समय के राजा आपस में लड़ते रहते थे जिसके फलस्वरूप अस्त्र–शस्त्रों का निर्माण काफी हुआ, जिसके प्रमाण आहत मुद्राओं पर अस्त्र शस्त्रों के अंकन के रूप में परिलक्षित होते है।

प्राचीन भारतीय सिक्कों पर विभिन्न अस्त्र–शस्त्रों का अंकन मिलता है। जिसके माध्यम से उस समय युद्ध में प्रयोग होने वाले आयुधों का ज्ञान प्राप्त होता है। इन अस्त्र–शस्त्रों में ब्राणाग्र, धनुष, तलवार, ढ़ाल, त्रिशूल, गदा आदि का अंकन प्राचीन मुद्राओं पर देखने को मिलता है। बाणाग्र का अंकन पंचमार्क मुद्राओं पर भी मिलता है। प्रारंम्भिक सिक्कों पर अस्त्र–शस्त्र का अंकन काफी कम मात्रा में देखने को मिलता है। लेकिन बढ़ते हुए बाह्य आक्रमणों व आपसी द्वैष के पश्चात अनेक नए–नए आयुधों को बढ़ावा मिला।

धनुष बाण:– आहत सिक्के हिन्द यूनानी राजाओं के अस्त्र–शस्त्रों की जानकारी सिक्कों से मिलती है। सम्राट अन्य अस्त्रों–शस्त्रों की अपेक्षा धनुष का प्रयोग अधिक करते थे। उनके सिक्कों पर अंकित धनुष से स्पष्ट होता है कि ये धनुष बांस तथा लोहे से बनते थे।[3] हिन्दू–यूनानी राजाओं के सिक्कों के पृष्ठ भाग पर अपोलो, हेराक्लेज देवों तथा अर्तेमिस देवी के हाथ में धनुष लिए हुए अंकन मिलता है।[4] इण्ड़ोग्रीक शासक डेमेट्रियस, आर्टेमिडोस तथा पिउकोलॉस के सिक्कों पर देवी अर्तेमिस को दायें हाथ के द्वारा पीठ से बंधे तरकस से तीर निकालते हुए दर्शाया गया है। युक्रेटाईडेज व अपोलोड़ोट्स के ताम्र सिक्कों पर अपोलो का अंकन है जिसके दायें हाथ में बाण तथा बायें हाथ में धनुष है। हिप्पोस्ट्रेप्स[5] के ताम्र सिक्कों के अग्रभाग पर अपोलो दोनों हाथों में बाण लिया हुए अंकित है।

धनुष सातवाहन शासकों का भी प्रमुख आयुध था जिससे सीसे से बने सिक्कों पर धनुष–बाण अंकित है। एक सिक्के पर धनुष की प्रत्यंचा नीचे की ओर तथा नुकीला बाण ऊपर की ओर है।[6] सातवाहनों के काल में बाण लोहे तथा हड्डी से बनाऐ जाते थे। वशिष्ठी पुत्र तथा गौतमी पुत्र सातकर्णी के सिक्कों में धनुष की प्रत्यंचा पर चढ़े हुए नुकीले एवं तीक्ष्ण धार वाले बाणों का अंकन मिलता है।

कुषाण काल के अस्त्र–शस्त्रों में धनुष को प्रमुख आयुध माना गया है। कुषाण शासक हुविष्क के सिक्कों के पृष्ठ भाग पर ननना देवी का अंकन मिलता है जो अपने बायें हाथ में धनुष लिए हुए है।[7] हुविष्क की एक अन्य मुद्रा के पुरोभाग पर एक धनुर्धारी का अंकन है जो अपने बराबर धनुष धारण किए हुए है। हुविष्क की मुद्रा के पृष्ठ भाग पर देवी को धनुष लिए हुए दिखाया गया है।[8] बाण को तरकस से निकाल कर खींचें हुए हुविष्क के सिक्कों पर दर्शाया गया है।

गुप्तकालीन सिक्कों पर भी धनुष–बाण का अंकन मिलता है। इस काल में धनुष बांस, ताल, लकड़ी, शार्ग तथा धातु आदि के बनाये जाते थे।[9] गुप्तकालीन योद्धा बड़े कुशल धनुर्धर होते थे जो दोनों हाथों से धनुष बाण चलाने में प्रवीण थे। गुप्त शासक समुद्रगुप्त के व्याघ्रनिहन्ता प्रकार के स्वर्ण सिक्कों में शासक को धनुष द्वारा व्याघ्र पर आक्रमण करते हुए दर्शाया गया है। तथा धनुर्धर प्रकार के सिक्कों पर राजा के बांये हाथ में धनुष को दिखाया गया है। चन्द्रगुप्त द्वितीय के[10] धनुर्धर प्रकार वाली मुद्राओं पर राजा के बांयें हाथ में धनुष है तथा दांयें हाथ में बाण है। राजा–रानी प्रकार के सिक्कों में अग्रभाग पर राजा को बांयें हाथ में धनुष लिये हुये दिखाया गया है। इसी प्रकार के कुछ सिक्कों पर राजा के दायें हाथ से धनुष की प्रत्यंचा खिचते हुए दर्शाया गया है। स्कन्दगुप्त शासक के भी कुछ सिक्कों पर राजा

के दायें हाथ में बाण तथा बायें हाथ में धनुष लिए हुए है। परवर्ती गुप्त राजाओं ने सोने का केवल एक मात्र धनुर्धर प्रकार का सिक्का जारी किया। इस प्रकार विभिन्न राजवंशों द्वारा चलाई गई मुद्राओं पर धनुष व बाण का अंकन प्राचीन काल में धनुष बाण की उपयोगीता को सिद्ध करता है। उपरोक्त विवरणों से ऐसा प्रतीत होता है कि धनुष–बाण सबसे पहले प्रयोग में लाए जाने वाला अस्त्र–शस्त्र रहा।

तलवारः– तलवार का प्रयोग भारत में प्राचीन काल से ही काफी उपयोगी रहा है तथा इसे प्रमुख आयुध माना जाता है, ये लोहे से बनी होती है। महाकाव्यों में इसे असि, करवाल, खड्ग, कृपाण आदि शब्दों से सम्बोधित किया है।[11] विभिन्न शासकों की मुद्राओं पर तलवार का अंकन मिलता है। मौर्यकाल में तलवारें पक्के लोहें से बनाई जाती थी। यह तीन प्रकार की होती थी। निस्त्रिंश यह मुड़े हुए हत्थे वाली तलवार थी, 2 मण्डलाग्र– यह सीधी तलवार थी तथा इसके ऊपर गोल चक्र होता था।3. असियष्टि– यह बहुत लम्बी तथा तेज धार वाली तलवार होती थी।[12]

हिन्द–यूनानी शासकों के सिक्कों से भी तलवार की जानकारी मिलती है। नीसियसे के चान्दी तथा मीनेन्डर द्वितीय के ताम्र सिक्कों के अग्रभाग पर राजा को सैनिक वेशभूषा में दर्शाया गया है जिसकी कमर पर तलवार लटकी हुई है।[13] कुषाण काल में तलवार युद्ध में प्रयोग किया जाने वाला मुख्य शस्त्र था। कुषाण शासक विमकेडफिसेस की स्वर्ण मुद्राओं के अग्रभाग पर राजा का बांया हाथ तलवार की मूठ पर रखा हुआ अंकित किया गया है कनिष्क प्रथम[14] के सोने के सिक्कों पर देवता के दांये हाथ में तलवार दिखाई पड़ती है। हुविष्क द्वारा जारी की गई स्वर्ण मुद्राओं के पृष्ठभाग पर तथा वासुदेव प्रथम के स्वर्ण सिक्कों में अग्रभाग पर राजा के बांयी और कमर पर तलवार का अंकन मिलता है। इसी प्रकार कनिष्क तृतीय की स्वर्ण मुद्राओं के पुरोभाग पर राजा की कमर पर बंधी हुई म्यान में तलवार का अंकन मिलता है। कुषाण काल में मुख्यतः दो प्रकार की तलवार होती थी। पहली गंधार तथा दुसरी मथुरा क्षेत्र में प्रचलित थी। गंधार क्षेत्र में प्रचलित तलवार रोमन तलवारों जैसी थी जो कि छोटी दुधारी व लम्बाई में सीधी व बहुत तीखी तथा बीच से उभरी हुई है। इसकी मूंठ तथा ब्लेड़ के बीच क्रास गार्ड लगा हुआ है।[15] दुसरे प्रकार की तलवारें मथुरा क्षेत्र में प्रचलित तथा स्वदेशी तकनीक से निर्मित है। इसका ब्लैड़ पत्तीनुमा है तथा इनकी प्राप्ति मथुरा, सांची व उड़ीसा से हुई है। तलवार गुप्त काल का प्रमुख शस्त्र था इसे युद्ध में लगभाग सभी सैनिक अपने पास रखते थे। गुप्तकालीन अस्त्र–शस्त्रों में धनुष बाण के बाद तलवार का ही स्थान प्रमुख था। गुप्त काल में तलवार का सम्पूर्ण विकास हो चुका था। सिक्कों पर गुप्तकालीन तलवार का अंकन स्पष्ट रूप से मिलता है। गुप्तकालीन शासकों में समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त द्वितीय व कुमार गुप्त के सिक्कों पर राजा को कमर में तलवार बांधे हुए दर्शाया गया है। कुछ सिक्कों पर राजा के हाथ में भी तलवार का अंकन मिलता है।[16]

भालाः– भारतीय आयुधों में प्राचीन काल से ही उपयोगी रहा है। समय के साथ–साथ इसकी बनावट में भी परिवर्तन होता गया। विभिन्न राजवंशों की मुद्राओं पर भाले का अंकन मिलता है। भारत में यौधेय गण के लोग जिनका उल्लेख पाणिनी ने आयुध जीवी संघ के रूप में किया है। ये भाले से युद्ध करने में विख्यात योद्धा थे। यौधेयों के ब्रहाण्यदेव प्रकार अथवा षड़मुखी कार्तिकेय का अंकर है, जिसके दायें हाथ में भाला तथा बांया हाथ कमर पर है।[17] कार्तिकेय–देवसेना प्रकार वाले ताबें के सिक्कों के अग्रभाग पर भी कार्तिकेय को दाहिने हाथ में भाला लिए हुए प्रदर्शीत किया गया है।

यौधेय शासकों द्वारा जारी किये गये सिक्कों के अग्रभाग पर कार्तिकेय का अंकन है जो कि वर्म अर्थात् कवच पहने हुए तथा दायें हाथ में भाला लिये हुए है।[18] यौधेयों के सिक्कों पर कार्तिकेय को मुख्य देव के रूप में दर्शाया गया है।

इंण्ड़ो ग्रीक शासकों के सिक्कों पर भाले का अंकन बहुलता से मिलता है। अनेक ग्रीक देवी–देवताओं द्वारा भी भाले को प्रमुख आयुध के रूप में अपनाया गया है। डायोडोट्स की स्वर्ण मुद्राओं पर ज्यूस वज्र प्रहार करते हुए अंकित है उसके पास भाला भी दिखाया गया है। अन्तिमेक द्वारा चलाई गई ताम्र मुद्राओं पर देवी नाइके भाला लिए हुए है। कुषाण शासक मिनेण्ड़र की रजत मुद्राओं पर भाले का निर्देशन सर्वाधिक उत्कृष्ट रूप में हुआ है।[19] इसी प्रकार कुषाण वंशीय अजेश का अश्वारोही वेश भाले से युक्त है। भाले तथा बरछे सातवाहनों के भी मुख्य अस्त्र थे।

कुषाण काल में भाला अस्त्र व शस्त्र दोनों रूपों में प्रयोग किया जाता था। कुषाण कालीन सिक्कों में भाले का अंकन सबसे ज्यादा संख्या में मिला है इससे ज्ञात होता है कि भाला कुषाण काल में प्रमुख आयुध था। भाला युक्त सैनिक की आकृति का अंकन है। कनिष्क शासक की स्वर्ण मुद्राओं के अग्रभाग पर राजा के बायें हाथ में तथा कुछ सिक्कों पर युद्ध देवता के दाहिने हाथ में भाले का अंकन मिलता है। हुविष्क की स्वर्ण मुद्राओं के अग्रभाग पर राजा के बायें हाथ में तथा कुछ सिक्कों पर गजारोही के बायें हाथ में भाले का अंकन मिलता है।[20] कनिष्क तृतीय द्वारा जारी की गई स्वर्ण मुद्राओं पर उसे पृष्ठभाग में बांयें हाथ से भाला पकड़े हुए दिखाया गया है।

गुप्तकालीन भाले को आकार तथा प्रयोग के आधार पर प्रास, भल्ल, कुन्त तथा शूल आदि नाम दिए हैं। सिक्कों पर अंकित तथा शिल्प कला में अंकित भालों तथा बरछों के अंकन के आधार पर इन्हें कई प्रकारों में बांटा गया है।[21] गुप्त शासकों की विभिन्न मुद्राओं पर इसका अंकन मिलता है। समुद्रगुप्त के दण्डधारी प्रकार वाले सिक्कों में भाले का अंकन किया गया है।[22] चन्द्रगुप्त द्वितीय की ध्वजधारी प्रकार वाली मुद्राओं पर भी भाले का अंकन मिलता है। इसी प्रकार गुप्त शासक कुमार गुप्त की मयूर तथा कार्तिकेय प्रकार वाले सिक्कों पर कार्तिकेय को मयूर पर सवार दिखाया गया है जो बायें हाथ में भाला लिये हुये हैं।[23]

कटारः कटार को प्राचीन भारत में मौष्टिक एवं वापिस के नाम से जाना जाता था। यह पदाति सैनिकों का व्यक्तिगत आयुध था इसका प्रयोग दूर से फैंककर तथा शत्रु के समीप आने पर द्वंदू युद्ध में भी कटार का प्रयोग किया जाता था।[24] यह कमर में सामान्यतः बेल्ट से लटकी रहती थी। यह तलवार का छोटा रूप होती थी जिसका अंतिम भाग नुकीला, गर्दन और मध्यभाग चौड़ा तथा अलंकृत होता था। इंण्ड़ों–ग्रीक राजाओं के सिक्कों पर कटार का अंकन कम मिलता है। स्ट्रेटों प्रथम की चांदी की मुद्राओं पर शासक को दांयी ओर चलता हुआ दिखाया गया है जिसके दायें और कमर पर कटार का अंकन है। कुषाण शासकों व सैनिकों द्वारा भी कटार का प्रयोग किया जाता था। सेना के एक दृश्य में सैनिकों को कटार युक्त अंकित किया गया है।[25] खंजर का इस समय युद्ध में सामान्य प्रयोग होता रहा है।

गुप्त शासकों की मुद्राओं पर कटार का अंकन मिलता है। समुद्रगुप्त के कृतान्त–परशु प्रकार के स्वर्ण सिक्कों में अग्रभाग पर राजा के दांयी और खंजर लटका हुआ दिखाया गया है। इसी प्रकार कुमारगुप्त व्याघ्रनिहन्ता–गजारोही प्रकार के सिक्कों में दाहिने हाथ पर खंजर लिये हुये दिखाया गया है। इस समय

खंजर का उपयोग केवल आपात काल में एवं नजदीक से शत्रु पर किया जाता था। सिक्कों पर खंजर का अंकर दुधारा, तिकोना, खंडक आकार का होता था।[26] जिसमें मूठ के ऊपर ढ़क्कन भी होता था।

त्रिशूलः– अस्त्र–शस्त्रों का विभाजन करते समय 'शूल' को हलमुख श्रेणी में तथा त्रिशूल को चलयंत्रों की श्रेणी में रखा जाता है। यह विभाजन समभवतः इनके कार्यों के आधार पर किया गया है। शूल रूप में इसे हाथ से पकड़कर फैंका जाता था जबकि त्रिशूल को फेंककर मारा जाता था। इसे लोहे व अन्य धातुओं से बनाया जाता था।[27] त्रिशूल भारतीय देवता शिव तथा इंडो–ग्रीक देवता पोसीड़न का प्रमुख आयुध है। इसमें तीन शूल निकले हुए होते है बीच वाला शूल सीधा तथा लम्बा होता है, दोनों किनारे वाले शूल थोड़े मुड़े हुए होते है। आहत मुद्राओं पर भी त्रिशूल का अंकन मिलता है। इण्ड़ो–ग्रीक शासक एण्टिमेक्स थियोस तथा अन्तिमेक्स[28] की रजत मुद्राओं पर पृष्ठभाग में पोसीडन को खड़े हुए दिखाया गया है जो कि दांयें हाथ में लम्बी त्रिशूल लिये हुये हैं। इण्ड़ोग्रीक सिक्कों में त्रिशूल के अंकन में विभिन्नता मिलती है, कुछ सिक्कों पर अंकित त्रिशूल का दण्ड भाग सीधा कुछ का वर्तालुकार है। अंतिमेक्स के सिक्कों पर त्रिशूल का मध्य भाग चपटा मिलता है।

कुषाण काल में भी युद्धों में प्रयोग किये गये हथियारों में त्रिशूल की भी अहम भूमिका रही है। यह शिव का प्रमुख अस्त्र–शस्त्र है। विभिन्न कुषाण शासक विमकैडफिसेस, कनिष्क, हुविष्क, वासुदेव प्रथम तथा वासुदेव द्वितीय के सिक्कों में पृष्ठभाग पर शिव का अंकन मिलता है, जिसके हाथ में त्रिशूल दर्शाया गया है। कुषाण–कालीन कुछ सिक्कों में त्रिशूल–फरसा का भी अंकन मिलता है। विभकेडफिसीस के स्वर्ण सिक्कों पर त्रिशूल के साथ परशु जुड़ा हुआ है।[29] कुषाण शासक वासुदेव–प्रथम को भी उसकी स्वर्ण मुद्राओं में बांये हाथ से त्रिशूल पकड़े हुए दिखाया गया है। गुप्त काल में त्रिशूल प्रयोग युद्ध में कम किया जाता था। इसे केवल शिव के सम्मान स्वरूप पूज्य अस्त्र माना जाता था। डॉ. पंत का मत है कि गुप्तकालीन सिक्कों पर त्रिशूल का अंकन नहीं है लेकिन गुप्त शासक कुमार गुप्त की रजत मुद्राओं पर पृष्ठभाग में त्रिशूल का अंकन मिलता हे।[30] इस काल में त्रिशूल व परशु की भिन्नता खंडित हो गई थी।

गदाः– प्राचीन भारत में गदा, युद्ध में प्रयुक्त होने वाला प्रमुख हथियार था। थोड़े बहुत प्रभेद के अनुसार इसके विभिन्न नाम मिलते हैं जैसे–गदा, मूसल परिध, मुगदर, महागदा और यष्टि आदि। चतुर्थ शताब्दी ई.पू. में गदा सिवि जाति का प्रमुख आयुध था। मौर्य काल में भी गदा का प्रयोग होता था। इण्ड़ो–ग्रीक शासकों के सिक्कों पर गदा का अंकन बहुलता से मिलता है। यूथीडेमस, डेमोट्रियस, स्ट्रेटो प्रथम, थियोफिलास एवं हरमेयस के रजत एवं ताम्र सिक्कों के अग्र एवं पृष्ठभाग पर गदा का अंकन मिलता है।[31] युनानी देव हैराक्लीज को बांये तथा दांयें हाथों से गदा पकड़े हुए विभिन्न सिक्कों पर अंकित किया गया है। इन सिक्कों पर अंकित गदा नीचे से भारी व ऊपरी भाग पतला दिखाया गया है। सातवाहन कालीन कलाओं में भी गदा का अंकन मिलता है।

कुषाण काल में गदा तथा मुगदर का प्रयोग भी युद्धों में किया जाता था। कुजुल कैडफिसेस की ताम्र मुद्राओं पर हेराक्लीज को गदा से युक्त अंकित किया गया है। विमकैडफिसेस की स्वर्ण मुद्राओं के अग्रभाग पर राजा दाहिने हाथ में गदा लिये हुये है। हुविष्क के स्वर्ण सिक्कों के अग्रभाग पर राजा के दाहिने हाथ में तथा कुछ सिक्कों पर युनानी देवता हेराक्लीज को हाथ में गदा या मुगदर लिए हुए अंकित किया गया है।[32] गुप्त शासक चन्द्रगुप्त–प्रथम के राजा–रानी प्रकार तथा चन्द्रगुप्त–द्वितीय की चक्रविक्रम प्रकार के स्वर्ण सिक्कों पर चक्रधारी विष्णु के बायें हाथ में गदा का अंकन है।

चक्रः– प्रारंम्भिक भारतीय सिक्के पंचमार्क पर चक्र का अंकन दर्शाया गया है। यह पौराणिक अस्त्र माना गया है। इंड़ो–ग्रीक शासक मिनेण्ड़र के ताम्र सिक्कों के अग्रभाग पर नुकीले कांटों वाले चक्र का अंकन है। सम्भवतः यह लड़ाई में दुर से फैंककर मारने के लिए प्रयोग में आता था। सातवाहन शासकों की मुद्राओं पर भी चक्र का अंकन मिलता है सिरि सातकर्णि द्वितीय के स्वर्ण सिक्कों के पृष्ठभाग पर छह स्पोक वाला चक्र अंकित है।[33] कुषाण शासकों की मुद्राओं में कनिष्क प्रथम की मुद्राओं पर चक्र का अंकन मिलता है। इसी प्रकार राजा हुविष्क की स्वर्ण मुद्राओं के पृष्ठभाग पर तीन सिर वाले पुरूष का अंकन है; इसके दायें हाथ में छह तिलियों वाले चक्र का अंकन है। गुप्त शासक चन्द्रगुप्त द्वितीय के चक्रविक्रम प्रकार के स्वर्ण सिक्कों पर चक्र धारी पुरूष का अंकन मिलता है। गुप्त शासक कुमार गुप्त प्रथम के खेरीताल से मिले स्वर्ण सिक्कों पर भी चक्र का अंकन मिलता है।[34] यह लोहे से बने हुए थे जिन पर छह, आठ या इससे अधिक कांटे बने हुए थे।

वज्रः– वज्र का ऋग्वेद के विभिन्न ऋचाओं में वर्णन मिलता है इसे इन्द्र देवता का प्रमुख आयुध माना जाता है। यह इस काल का महत्त्वपूर्ण अस्त्र–शस्त्र था। यह धातु, हड्डी तथा पत्थर से बना होता था। इस शस्त्र में सैकड़ों नुकीले कांटे लगे होते थे। हेति व प्रहेति वज्र के समान आयुध होते थे।[35] इण्ड़ो–ग्रीक शासकों के प्रमुख देवता ज्यूस भारतीय देवता इन्द्र के समान माना जाता है जिसका मुख्य आयुध वज्र है। यूनानी शासक डायोडोटस के स्वर्ण सिक्कों पर तथा डेमेट्रियस प्रथम, एण्टिमेक्स प्रथम, अग्राथोक्लेज व हेलियोक्लेज की रजत मुद्राओं के अग्रभाग पर ज्यूस देवता को दिखाया गया है जिसके दायें हाथ में वज्र है। कुछ मुद्राओं पर उसे वज्र फैंकते हुए अंकित किया गया है।[36] मीनेण्ड़र प्रथम, स्ट्रेटो प्रथम तथा नीसीअस राजाओं के चांदी व ताम्र सिक्कों के पृष्ठभाग पर ऐथना देवी को दर्शाया गया है जिसके दायें हाथ में वज्र है। सातावाहन शासकों के सिक्कों के पृष्ठभाग पर वज्र के चिन्ह अंकित है। संभवतः इस समय युद्ध में वज्र का प्रयोग कम रहा होगा। कुषाण कालीन शासकों के सिक्कों पर भी वज्र का अंकन मिलता है। विमकेडफिसेस, कनिष्क, हुविष्क तथा वासुदेव शासकों के सिक्कों पर ओशो अर्थात शिव का अंकन है, जो त्रिशुल व वज्र धारण किये हुए है।[37]

सुरक्षात्मक शास्त्रास्त्रः– युद्ध में आक्रमण अस्त्र–शस्त्रों के साथ–साथ सुरक्षात्मक शस्त्रास्त्र भी बहुत जरूरी होते है। इसलिए प्राचीन काल में इन सुरक्षात्मक शास्त्रास्त्रों का प्रयोग किया गया। सुरक्षात्मक शस्त्रास्त्र में प्रमुख ढ़ाल, कवच, शिरस्त्राण, दस्ताने आदि थे।

ढ़ालः– युनानी लेखकों के विवरण से ज्ञात होता है कि पोरस ने सिकन्दर के साथ युद्ध में धातु से बनी हुई ढ़ाल का प्रयोग किया था।[38] इसके अलावा उन्होंने उल्लेख किया है कि भारतीय सैनिक वृषभ की खाल से बनी ढ़ाल का प्रयोग करते थे। इंड़ो–ग्रीक शासकों के सिक्कों पर ढ़ाल को अंकित किया गया है। डायोडोट्स के स्वर्ण सिक्कों व डेमेट्यिस, एन्टिमेक्स प्रथम के रजत सिक्कों के पृष्ठभाग पर ज्यूस को दायें हाथ से वज्र फैंकते हुए तथा बांयी भुजा के एजिस नामक ढ़ाल लिए हुए दिखाया गया

है।[39] यह ढ़ाल बकरी की खाल से बनी हुई है। मीनेण्ड़र प्रथम, हेलियोक्लेज व डायोमेक्स के चांदी सिक्कों में अग्रभाग पर राजा का आवक्ष बायीं तरफ से ढ़ाल से ढ़का हुआ है। डैमेट्रियस प्रथम व मिनेण्ड़र प्रथम के ताम्र सिक्कों में वृत्ताकार छोटी ढ़ाल का अंकन मिलता है। अगाथोक्लिया की रजत मुद्रा के पृष्ठभाग पर स्ट्रेटो प्रथम के रजत सिक्कों में पृष्ठभाग पर एंथेना देवी को शिरास्त्र पहने तथा हाथ में ढ़ाल का अंकन बहुलता से मिलता है। इससे ज्ञात होता है कि ये युद्धों में ढ़ाल का प्रयोग ज्यादा करते थे। उस समय ढ़ाल संभवतः चमड़े तथा धातु से बनाई जाती थी।[40] सातवाहन कालीन कला में भी ढ़ाल का अंकन मिलता है। कुषाण काल में ढ़ाल का उपयोग काफी रहा है। इसकी पुष्टि कुषाण कालीन मूर्तिकला व सिक्कों पर अंकन से होती है। कुजल कैडफिसेस के ताम्र सिक्कों पर सैनिकों को ढ़ाल लिये हुए दर्शाया गया है। इसी प्रकार हुविष्क की स्वर्ण मुद्राओं के पृष्ठभाग पर स्त्री तथा पुरूष ढ़ाल लिये हुये है।[41]

गुप्तकाल में ढ़ाल संभवतः धातु बांस तथा चमड़े की बनी होती थी। ये छोटी तथा बड़ी दोनों प्रकार की होती थी। तथा इसका वजन हल्का होता था। कुमारगुप्त प्रथम के अप्रतिछात प्रकार के स्वर्ण सिक्कों में अग्रभाग पर तीन आकृतियां बनी हुई है। मध्य में राजा खड़ा है तथा राजा के बांयी और टोपी पहने पुरूष को ढ़ाल लिए हुए दर्शाया गया है।[42]

कवचः– भारतीय इतिहास में प्रारंम्भिक काल से ही कवच का सुरक्षात्मक शास्त्रास्त्र के रूप में वर्णन मिलता है। ऋग्वेद काल में द्राविस और वर्मन् शब्द कवच के लिए प्रयुक्त हुए है। यह धातु तथा चमड़े से बना होता था जिसे शत्रु के आक्रमण से बचने के लिए शरीर पर धारण किया जाता था।[43] मौर्य काल में सैनिक तो कवच धारण करते ही थे इसके साथ–साथ कवच युक्त घोड़ों एवं लोहे की परतों के मढ़े हुए रथों का भी वर्णन मिलता है। इण्ड़ों–ग्रीक शासकों के सिक्कों पर कवच का अंकन मिलता है। इण्ड़ो–ग्रीक राजा अगथोक्लेज द्वारा प्रचलित रजत मुद्राओं के अग्रभाग पर शासक सिंह का चर्म कवच पहने हुए है।

इसी प्रकार डैमेट्रियस की रजत मुद्राओं के पृष्ठभाग पर पल्लास देवी कवच पहने हुए दिखाई गई है। कुछ सिक्कों के पुरोभाग पर राजा की अर्द्ध–प्रतिमा का अंकन है जो कवच पहने हुए है। कुषाण शासक कवच का प्रयोग शत्रु के आक्रमण से बचाव के लिए करते थे। कुषाण शासक हुविष्क के स्वर्ण सिक्कों के पृष्ठभाग पर युद्ध देवता को कवच पहने दर्शाया गया है तथा कुछ सिक्कों के पृष्ठभाग पर युद्ध देवता को कवच पहले दर्शाया गया है। वासुदेव शासक उसके स्वर्ण सिक्कों के अग्रभाग पर सम्पूर्ण शरीर को ढ़कने वाला कवच पहने अंकित है।[44]

गुप्त काल में आक्रमणों से सुरक्षा के लिए कवच को काफी सुदृढ़ रूप से बनाया जाने लगा। इस समय कवच के निचले भाग में रूई लगा दी जाती थी ताकि कवच के ध्वस्त होने पर सुरक्षा की जा सके। उत्तर प्रदेश के कैजाबाद जिले में गौसईंगज नामक स्थान से प्राप्त समुद्रागुप्त के एक सिक्के पर राजा को क्रोधित मुखाकृति में दिखाया गया है। वह शिरास्त्र पहने हुए है तथा वक्ष पर कवच को धारण किये हुए है।[45]

अन्य अस्त्र–शस्त्रः– उपरोक्त वर्णित अस्त्र–शस्त्रों के अलावा प्राचीन भारतीय शासकों की मुद्राओं पर अन्य विभिन्न आयुधों का अंकन मिलता है जैसे, कुल्हाड़ी, कार्नुकोपिया, अंकुश तथा सुरक्षात्मक शस्त्रास्त्रों में हैट या सिरशत्राण आदि का अंकन किया गया है। कुषाण शासक विमकैड़फिसेस के स्वर्ण सिक्कों के पृष्ठभाग पर शिव के दाहिने हाथ में परशु (कुल्हाड़ी) का अंकन है। अंकुश का प्रयोग युद्ध में हाथी को नियंत्रण करने के लिए किया जाता था। इसका दण्ड़ छोटा, एक भाग सीधा एवं नोकदार तथा दूसरा भाग एक तरफ मुड़ा होता था, जो कि सम्पूर्ण धातु का बना होता था। विमफैडफिसेस[46] के स्वर्ण सिक्कों के अग्रभाग पर राजा के दायें हाथ में अंकुश दिखाया गया है। इसी प्रकार कुषाण शास्त्र हुविष्क के सिक्कों पर भी शासक को अंकुश सहित अंकित किया गया है। पाश ग्रीक देवता सरापों का प्रमुख आयुध था यह रस्सी का बना होता था। इसका प्रयोग युद्ध में शत्रु को समीप लाने के लिए किया जाता था। विभिन्न कुषाण शासकों की मुद्राओं पर पाश का अंकन मिलता है।[47] हुविष्क, वासुदेव तथा कनिष्क तृतीय की मुद्राओं के पृष्ठभाग पर चार हाथों वाली देवी दायें हाथ में कार्नुकोपिया तथा दायें हाथ में पाश है। जो उनकी शक्ति का प्रतीक है।[48] अतः इस प्रकार स्पष्ट है कि प्राचीन भारतीय मुद्राओं पर अंकित विभिन्न अस्त्र–शस्त्रों के माध्यम से उस समय के दौरान शक्ति प्रदर्शन करने के लिए देवी–देवताओं के साथ राजा का अंकन अस्त्र–शस्त्रों से युक्त होकर कला के माध्यम से मूर्तिकला, मुद्राओं आदि पर अंकन किया जाता था। इससे उस समय प्रयोग होने वाले विभिन्न आयुधों के साथ–साथ सुरक्षा कवचों का ज्ञान होता है।

संदर्भ सूची

1 पन्त, गायत्री नाथ, भारतीय अस:–शस्त्र, 1947, पृ. 10
2 पाण्ड़ेय, जयनारायण, पुरातत्व विमर्श, 1983, पृ. 509
3 पन्त, गायत्री नाथ, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 151
4 वाजपेयी, सन्तोष कुमार, ऐतिहासिक भारतीय सिक्के, 1997, पृ. 169
5 व्याइटहेड, आर.बी., इण्ड़ो–ग्रीक क्वायन्स, 1971, पृ. 76
6 सिंह, राम, प्राचीन भारतीय युद्ध व्यवस्था, 1987, पृ. 108
7 वाजपेयी, सन्तोश कुमार, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 202
8 सिंह, राम, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 109
9 पन्त, गायत्रीनाथ, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 138
10 अल्तेकर, ए.एस., क्वायंस एज ऑफ गुप्त एम्पायर, 1957, पृ. 93, 119, 124, 157
11 शर्मा, सेन, कुरूक्षेत्र वार–ए मिलिटरी स्ट्ड़ी, 1983, पृ. 162, 175–78
12 पन्त, गायत्री नाथ, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 83
13 वाजपेयी, सन्तोष कुमार, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 155
14 सर्वा, सत्या, द कुषाण न्युम्समैटिक्स, 1985, पृ. 99, 108, 110
15 शवसन, पी.एस., द इंडियन स्वार्ड, 1967, पृ. 20
16 पन्त, गायत्री नाथ, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 86
17 वाजपेयी, सन्तोष कुमार, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 51
18 कुमार, मनमोहन, न्यूमिस्मेटिक स्ट्डीज, भाग–6, पृ. 134–135
19 पन्त, गायत्रीनाथ, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 153
20 सिंह, राम, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 125
21 श्रीवास्तव, ए.के., ऐशियण्ट इण्ड़ियन आर्मी, पृ. 35
22 अल्तेकर, ए.एस., पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 143–144
23 पन्त, गायत्री नाथ, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 120
24 पन्त, जी.एन., वेपन्स इन ऐंशियण्ट इंडिया, पृ. 422
25 वही, पृ. 141
26 श्रीवास्तव, ए.के., पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 33
27 नाथ, गायत्री पंत, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 114
28 गार्डनर, पर्सी, द क्वायन्स ऑफ द ग्रीक एण्ड सिथिक किंग्स ऑफ बैक्ट्रिया एण्ड़ इंड़िया, 1971, पृ. 12

29 प्रकाश, सत्य एवं सिंह राजेन्द्र, क्वायंस इन एन्शियण्ट इण्ड़िया, पृ. 131
30 श्रीवास्तव, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 226
31 सिंह, राम, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 116
32 वही, पृ. 106
33 वाजपेयी, सन्तोष कुमार, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 133
34 अल्तेकर, ए.एस., पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 146
35 पाण्ड़ेय, श्याभलाल, वेदिककालनी राजव्यवस्था, 1971, पृ. 187
36 गार्डनर, पर्सी, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 3
37 सत्यश्रवा, द कुषाण न्युमिसमेटिक्स, 1985, पृ. 40
38 जे.डब्ल्यू, मैक्रिण्डल, इण्ड़िया एण्ड इट्स इनवेजन बाई अलैक्जैड़र, पृ. 108
39 गार्डनर, पर्सी, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 73
40 अल्तेकर, ए.एस., पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 208
41 सिंह, राम, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 134
42 वही, पृ. 136
43 वाजपेयी सन्तोष कुमार, ऐतिहासिक भारतीय सिक्के, 1997, पृ. 220
44 सत्य श्रवा, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 83
45 प्रसाद, कामेश्वर, सिटीज, क्राफट एण्ड कार्मस अण्डर दी कुषाणाज, पृ. 136
46 सिंह राम, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 125